जयपुर की कथक नृत्य-परम्परा के संवाहक कलाकार

- डॉ श्याम सुन्दर शर्मा

जयपुर के कला क्षेत्र में भारतीय शास्त्रीय संगीत की तीनों विधाओं यथा-गायन, वादन एवं नृत्य के नामचीन कलाकार हुए हैं जिन्होंने अपनी कला प्रतिभा एवं अनवरत संगीत-साधना से भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित किए हैं। जयपुर में नृत्य के घराने की समृद्ध परम्परा रही है। यहां के नृत्यकारों ने भारतीय शास्त्रीय नृत्य के घरानों में जयपुर घराने को अपनी प्रतिभा-कौशल, सृजनात्मक वृत्ति एवं कठिन परिश्रम से प्रतिष्ठित कर देश-विदेश में इसका प्रचार-प्रसार किया है।

प्रेरणा श्रीमाली

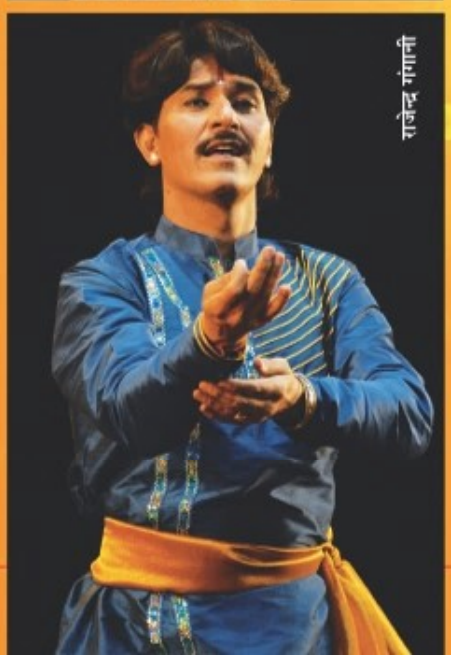
राजेन्द्र गंगानी

वर्तमान में कथक गुरु पं. गिरधारी महाराज, शशी सांखला, प्रेरणा श्रीमाली, राजकुमार जबड़ा, रेखा ठाकर, मंजरी किरण महाजनी और राजेन्द्र गंगाणी जैसे गुरुओं ने न केवल जयपुर के कथक घराने को अपनी सृजनशीलता से समृद्ध किया है बल्कि अनेक शिष्यों को तैयार कर इस परम्परा को आगे बढ़ाया है।

कथक नृत्य गुरु **शशी सांखला** एक ऐसी जानी-मानी नृत्यांगना है जिन्होंने अपनी प्रतिभा से कथक नृत्य को तो समृद्ध किया ही है, राजस्थानी लोकशैली मांड गायकी के अभिनय प्रयोग से कथक के अभिनय पक्ष को नए आयाम प्रदान किए हैं। स्व. कुंदन लाल

मंजरी किरण महाजनी

पं. गिरधारी महाराज

गंगानी की शिष्या **प्रेरणा श्रीमाली** कथक के जयपुर घराने की वरिष्ठ नृत्यांगना, गुरु एवं एक कुशल कोरियोग्राफर भी हैं। इनका नृत्य पक्ष इतना सबल है कि इन्होंने कथक के परम्परागत विषयों के अलावा कथक और अमूर्तन पर भी बहुत कार्य किया है। इन्होंने कालीदास, कबीर, सूरदास, मीरा, केशव एवं अष्टछाप कवियों के अलावा संस्कृत एवं समसामयिक रचनाओं को भी कथक के माध्यम से रूपायित किया है। इनका नृत्य एवं अभिनय पक्ष इतना सशक्त है कि वे जो भी विषय चुनती हैं उसे अपने नृत्य से साकार कर देती हैं। कथक गुरु रोहिणी भाटे की शिष्या **मंजरी किरण महाजनी** एक ऐसी नृत्यांगना हैं जिन्होंने लय-ताल के साथ प्रभावी अभिनय एवं लावण्यमय अंग संचालन से अपनी नृत्य प्रतिभा का परिचय दिया।

राजेन्द्र गंगानी पं. कुंदनलाल गंगानी के पुत्र हैं और अपनी नृत्य प्रतिभा से न केवल घराने की परम्परा को जीवित रखा है बल्कि अनेक प्रयोगों से नृत्य को समृद्ध किया है तथा अनेक मेधावी नर्तक तैयर किए हैं।

डॉ. शशि सांखला

पं. गिरधारी महाराज कथकाचर्य पं. लक्ष्मी नारायण के पुत्र हैं। इनकी नृत्य शैली में जयपुर घराने की सभी विशेषताएं देखी जा सकती हैं। इनके अनेक शिष्यों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान कायम की है। **पं. राजकुमार जबड़ा** जयपुर घराने के कथक गुरु हैं। ये नृत्याचार्य पं. कन्हैयालाल जबड़ा के पुत्र हैं। इन्होंने अपनी नृत्य प्रतिभा से विशिष्ट पहचान बनाई है तथा अनेक प्रतिभाशाली शिष्य तैयार किए हैं। वर्तमान में ये जयपुर कथक केन्द्र में नृत्यगुरु के पद पर कार्यरत हैं।

डॉ. रेखा ठाकर जयपुर कथक घराने की वरिष्ठ नृत्यांगना हैं। इन्होंने पं. नारायण प्रसाद एवं पं. गौरी शंकर से नृत्य की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में ये जयपुर कथक केन्द्र में नृत्यगुरु के रूप में कार्यरत हैं।

डॉ. ज्योति भारती गोस्वामी कथक गुरु पं. गिरधारी महाराज की शिष्या हैं। इन्होंने अपनी नृत्य प्रतिभा का परिचय देते हुए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कथक नृत्य की प्रभावी प्रस्तुतियां दी हैं। वर्तमान में ये राजस्थान संगीत संस्थान में नृत्यगुरु के रूप में कार्यरत हैं। इनके अलावा जयपुर घराने के युवा एवं प्रतिभाशाली कथक नर्तकों की एक लम्बी श्रृंखला है। इनमें मनीषा गुलयानी, सुश्री अनुराग वर्मा, डॉ. कविता सक्सेना, डॉ. स्वाति अग्रवाल, श्वेता गर्ग, नमिता जैन, वेण जैन, अदिति रांवका, रीमा गोयल, सीमा गोयल, चेतन जबड़ा, साक्षी सिंह, रविन्द्र राठौड़, चित्रांश, देवांशी दवे, रितिका भट्ट, तरुण व्यास, मेघा जागावत आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पं. राजेन्द्र राव, हरिदत्त कल्ला, कमल कांत पंवार, कौशल कांत पंवार आदि गुणीजनों का भी कथक नृत्य के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।